Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अनामिका के 'तृन धरि ओट' उपन्यास में पारिस्थितिक नारीवाद और सीता की नई व्याख्या

राजविन्द्र कौर* डॉ.पूजा धमीजा**

* शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.) भारत
** सह आचार्य (हिंदी) टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.) भारत

शोध सारांश – अनामिका द्वारा रचित 'तृन धरि ओट' उपन्यास पारंपरिक नारीवादी विमर्श को पारिस्थितिक दृष्टिकोण से जोड़ते हुए स्त्री और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों को स्थापित करता है। इसमें सीता को केवल मिथकीय चरित्र के रूप में नहीं बल्कि एक बौद्धिक, संवेदनशील एवं तर्कशील स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सीता का व्यक्तित्व मातृत्व की पारंपरिक संकल्पना से परे जाकर समावेशी करुणा और सामाजिक दायित्वबोध से जुड़ता है। वह स्वयं की मुक्ति तक सीमित नहीं बल्कि प्रकृति, दलित–आदिवासी समुदायों और समस्त शोषित वर्गों की स्वतंत्रता में अपनी मुक्ति को देखती है। वे पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय को आपस में जोड़ते हुए एक समतामूलक समाज की संकल्पना प्रस्तुत करती हैं। यह उपन्यास स्त्री स्वायत्तता, पर्यावरणीय चेतना एवं सामाजिक समता के अंतर्संबंधों को उजागर करता है तथा पारिस्थितिक नारीवाद को भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित करता है। यह शोध आलेख 'तृन धरि ओट' उपन्यास के माध्यम से नारीवाद और पारिस्थितिकी के अंतर्संबंध को विश्लेषित करते हुए पारिस्थितिक नारीवाद की अवधारणा को समझने और उसके बहुआयामी पक्षों की व्याख्या करने का प्रयास करता है।

शब्द कुंजी – पारिस्थितिक नारीवाद, पर्यावरणीय चेतना, स्त्री स्वायत्तता, मातृत्व की अवधारणा, न्यायप्रिय स्त्री, समतामूलक समाज, शिक्षा और स्वाधीनता, रामायण पुनर्पाठ, सामाजिक न्याय, संवेदनशीलता और तर्कशीलता, लैंगिक भेदभाव।

प्रस्तावना – पारिस्थितिक नारीवाद एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक विचारधारा है, जो नारीवाद और पर्यावरणीय चिंताओं को जोड़ते हुए यह दर्शाती है कि स्त्री और प्रकृति के शोषण के बीच एक गहरा संबंध है। पारिस्थितिक नारीवाद की संकल्पना का सबसे प्रारंभिक उल्लेख फ्रांसीसी नारीवादी विचारक फ्रन्स्वा द यूबोण द्वारा 1974 में किया गया। उन्होंने अपनी पुस्तक 'ले फेमिनिज्म ओ ला मोर्ट' (Le Feminism ou la Mort (नारीवाद या मृत्यु) 1974 में पारिस्थितिक नारीवाद की विचारधारा को प्रारंभिक रूप से व्याख्यायित किया। फ्रन्स्वा द यूबोण ने पारिस्थितिक क्रांति में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित करते हुए 'इकोफेमिनिज्म' शब्द का प्रयोग किया जो पर्यावरणीय विमर्श और नारीवादी चिंतन के अंतर्संबंध को स्पष्ट करता है। 'फ्रन्स्वा के अनुसार स्त्रीत्व पर आधारित भूमि सबको सुरक्षा प्रदान करेगी।'[1] पारंपरिक समाजों में प्रकृति को एक माँ के रूप में देखा जाता था, जो जीवन प्रदान करती है, ठीक वैसे ही जैसे एक स्त्री अपने मातृत्व द्वारा जीवन का आधार बनती है। लेकिन उपनिवेशवाद, औद्योगीकरण और विज्ञान की पितृसत्तात्मक व्याख्या ने इस संबंध को कमतर आंकते हुए प्रकृति और स्त्रियों को केवल उपयोगी संसाधन के रूप में प्रस्तुत किया। 'ज्यों–ज्यों पुरुष का आत्मगौरव बढा, प्रकृति का शोषण चालाकी से करने के साथ ही वह युक्तिसंगत ढंग से औरत का भी शोषण करने लगा।'[2] इसके परिणामस्वरूप स्त्रियों को द्वितीयक दर्जे की स्थिति में रखा गया, जिससे उनके स्वतंत्र अस्तित्व और सामाजिक सहभागिता पर प्रतिबंध लगाए गए। इस सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि महिलाओं को केवल पीड़ित के रूप में नहीं बल्कि प्रकृति की संरक्षक और पर्यावरणीय संतुलन की संवाहक के रूप में देखा जाना चाहिए। महिलाओं के नेतृत्व में हुए चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे पर्यावरणीय संघर्ष यह प्रमाणित करते हैं कि पारिस्थितिक नारीवाद केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा न होकर एक सक्रिय और व्यवहारिक आंदोलन भी है। इस प्रकार पारिस्थितिक नारीवाद पर्यावरण और स्त्री के शोषण की चर्चा तक सीमित न रहकर एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। 'इको–फेमिनिज्म का मूल मंत्र पृथ्वी के समस्त जीव–जंतुओं में चौतन्य देखना और करुणा एवं स्नेह के व्यवहार से वे जिस शोषण का सामना करते हैं, उन्हें उनसे बचाना है।'[3] इस प्रकार पारिस्थितिक नारीवाद समाज, पर्यावरण और स्त्री के समानांतर संबंधों को न्यायसंगत बनाने की वकालत करता है।

साहित्य में यह प्रवृत्ति उन रचनाओं में देखने को मिलती है जो स्त्री–जीवन को प्रकृति के साथ जोड़कर देखती हैं और उसमें अंतर्निहित शोषण, संघर्ष, और प्रतिरोध को उजागर करती हैं। 'तृन धरि ओट' उपन्यास इस दृष्टिकोण से विशेष रूप से महत्तवपूर्ण है। इसमें सीता के चरित्र को पारिस्थितिक नारीवाद की अवधारणा के अंतर्गत पुनर्परिभाषित किया गया है। इस उपन्यास में सीता केवल एक पौराणिक पात्र न रहकर पर्यावरणीय चेतना से संपन्न, संवेदनशील और जागरूक नायिका के रूप में उभरती हैं, जो प्रकृति, वन्यजीव, जल संसाधन और हाशिए पर स्थित समुदायों के प्रति आत्मीय संबंध स्थापित करती हैं। पारंपरिक रामायण की कथावस्तु को स्त्री–दृष्टि से देखने का यह प्रयास सीता को एक नई पहचान देता है। सीता का विचार है कि जब तक पृथ्वी का प्रत्येक जीव स्वतंत्र नहीं हो जाता तब तक उनकी मुक्ति अधूरी है। इस विचार से उनकी प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता

और संरक्षण की प्रतिबद्धता प्रकट होती है। उपन्यास में 'सीतायण' नामक एक नया अध्याय जोड़ा गया है, जो सीता के दृष्टिकोण से रामायण की पुनर्कल्पना करता है। सीता अपने सीतायण की शुरुआत एक तीखे वाक्य से करती हैं, 'बाल-कांड' होगा, पर 'बालिका-कांड' जैसा पद तो अवधारणा के इतिहास में नहीं है।'[4] यह वाक्य सीता के भीतर के गहरे क्षोभ और विरोध को व्यक्त करता है। स्त्री और बालिका की पहचान को हमेशा से एक निश्चित और सीमित तरीके से प्रस्तुत किया गया है, जो उनके अस्तित्व और संघर्षों को नजरअंदाज करता है। इस वाक्य के माध्यम से सीता स्त्री के संदर्भ में समाज की भ्रांतियों और यथास्थितिवादी दृष्टिकोण की आलोचना करती हैं, जो उसे केवल एक निष्क्रिय, मूक पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है और उसकी स्वायत्तता तथा संघर्ष को नकारता है। 'तृन धरि ओट' में नारीवाद केवल स्त्री-पुरुष संबंधों तक सीमित न होकर पारिस्थितिकी से भी जुड़ा हुआ है। अनामिका की सीता समाज के अन्याय का प्रतिकार करती हैं और प्रकृति व पर्यावरण के साथ गहरे संबंध को भी दर्शाती हैं। सीता वन में रहकर मातंगी के साथ मिलकर वन्य जीवन और आदिवासी संस्कृति को अपनाती हैं, जो पारिस्थितिकी और नारीवाद के सहसंबंध को इंगित करता है। उपन्यास इस बात पर बल देता है कि जब तक धरती का प्रत्येक प्राणी स्वतंत्र नहीं होगा तब तक स्त्री भी पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हो सकती।

'तृन धरि ओट' में चित्रित सीता पारंपरिक लोकमानस में स्थापित रूढ़िगत छवि से भिन्न एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। इसमें सीता का चिंतन तार्किक है। वे पति की केवल अनुगामिनी नहीं बल्कि उनके प्रत्येक निर्णय में सक्रिय सहभागिता निभाती हैं। 'हमेशा ही तर्क किया-कभी बोलकर, कभी चुप रहकर! हां, तर्क करते हुए कभी आपा नहीं खोया, न सन्तुलन ही, और सामने वाले की हर बात गौर से सुनकर विचार लेने के बाद ही धीरे-धीरे अपनी बात रखी-जैसे माँ बाबा के सामने रखती थी।'[5] उनकी यह विशेषता उन्हें एक बौद्धिक एवं तर्कशील नायिका के रूप में स्थापित करती है। राम स्वयं भी शासन-प्रशासन से जुड़े प्रत्येक विषय पर उनकी राय लेना आवश्यक समझते हैं। सीता न केवल राम को उपदेश देती हैं बल्कि सामाजिक अन्याय और लैंगिक भेदभाव का सशक्त प्रतिरोध भी करती हैं। शूर्पणखा की नाक काटने की घटना पर सीता का स्पष्ट प्रतिरोध यह दर्शाता है कि वे स्त्री के प्रेम-अभिव्यक्ति के अधिकार को मान्यता देने की पक्षधर हैं और पुरुषों के विशेषाधिकार को चुनौती देती हैं। वे लक्ष्मण के कृत्य की आलोचना करते हुए शूर्पणखा के प्रति सहानुभूति प्रकट करती हैं, 'एक किशोरी ही तो थी तुम। तुम्हारा प्रणय-निवेदन कोई इतना बड़ा पाप नहीं था कि तुम्हें क्षत-विक्षत कर छोड़ देते यों लक्ष्मण। नाक-कान काट लेना, वह भी किसी अबोध बाला का, कहीं से भी युक्तिसंगत नहीं।'[6] इस कथन के माध्यम से सीता पुरुषसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के प्रति पूर्वाग्रहों की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं और लैंगिक असमानता की आलोचना करती हैं।लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने की घटना को व्यापक सामाजिक संदर्भ में रखते हुए वे तर्क करती हैं कि यदि स्त्रियाँ पुरुषों की तरह ही प्रेम-अभिव्यक्ति के अधिकार का उपयोग करें और हर अनुचित प्रणय-निवेदन का प्रतिकार करें तो पुरुषों को भी सामाजिक दंड का समान रूप से भागी होना पड़ेगा-'कितने कामना-कातर पुरुषों के प्रणय-निवेदन, अपात्रों के प्रणय-निवेदन हर स्त्री को आठ से अड़तीस बरस तक झेलने होते हैं, अगर वह सबके नाक-कान काटती चले तो अधिकतर पुरुष नकटे ही मिलें।'[7] सीता समाज में स्त्री के प्रति एक असमान दृष्टिकोण और शोषण के खिलाफ सवाल उठाती हुईं पारिस्थितिक नारीवाद के मूल सिद्धांतों को भी मूर्त रूप देती हैं। वे सामाजिक अन्याय और लैंगिक भेदभाव का विरोध करने के साथ-साथ पर्यावरणीय चेतना और समावेशिता को भी केंद्र में रखती हैं। उनका विमर्श केवल व्यक्तिगत अधिकारों तक सीमित न रहकर संपूर्ण सृष्टि के कल्याण की दिशा में विस्तारित होता है।

सीता न केवल सामाजिक अन्याय और पितृसत्तात्मक मान्यताओं पर प्रश्न उठाती हैं अपितु आवश्यकता पड़ने पर राम को तर्कपूर्ण परामर्श भी देती हैं। अयोध्या के एक धोबी द्वारा सीता पर कटाक्ष किए जाने और तत्पश्चात अपनी पत्नी को घर से निर्वासित कर देने की घटना इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। उस स्त्री का एकमात्र तथाकथित अपराध यह था कि वह संपूर्ण रात्रि अपने घर वापस नहीं लौटी। जब राम ने इस प्रसंग को सीता के समक्ष प्रस्तुत किया तब सीता ने इस विषय में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राम को कहा, 'अगर किसी स्त्री को छल ही करना होगा तो वह रात की प्रतीक्षा क्यों करेगी? दिन में भी कितने कोने-अंतड़े ऐसे होते हैं जहाँ कुछ भी कर गुजरा जा सकता है। तू डाल-डाल, मैं पात-पात का पूरा वितान बिछाया जा सकता है!..'[8] इस घटना पर सीता की प्रतिक्रिया पितृसत्तात्मक नैतिकताओं की आलोचना के साथ-साथ स्त्री के आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता के अधिकार को रेखांकित करती है। वे इस बात की ओर संकेत करती हैं कि जिस प्रकार स्त्री को समाज में संकीर्ण नैतिक मानकों के तहत नियंत्रित किया जाता है उसी प्रकार प्रकृति को भी एक उपभोग की वस्तु मानकर उस पर अनुचित प्रतिबंध लगाए जाते हैं। स्त्री और प्रकृति दोनों को ही नियंत्रण और शोषण की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, जहाँ उनके अस्तित्व और स्वतंत्रता को सीमित करने के लिए नैतिकता और परंपरा के माध्यम से दमनकारी संरचनाएँ निर्मित की जाती हैं। सीता एक ऐसी न्याय व्यवस्था का समर्थन करती हैं जो संवेदनशीलता और पुनर्स्थापनात्मक न्याय पर आधारित हो। वे राम को सुझाव देती हैं, 'धोबिन को मानपूर्वक यहाँ लाइए। मैं यहाँ उसे अपने महल में स्थान दूंगी। हर आहत स्त्री का मायका यह राजभवन होगा, तो ही रामराज्य का स्वप्न पूरा करा पायेंगे आप!'[9] राम-राज्य और सामाजिक न्याय के संबंध में सीता स्पष्ट रूप से कहती हैं कि राजा का धर्म केवल सत्ता संचालन नहीं बल्कि समाज में न्याय और करुणा की स्थापना करना भी है। वे कहती हैं कि मर्यादा केवल एक नियम ना होकर एक जीवंत प्रक्रिया है, जो समय के साथ बदलनी चाहिए। सीता की वैकल्पिक न्याय की अवधारणा पितृसत्तात्मक न्याय-व्यवस्था को चुनौती देती है और संवेदनशील व समावेशी न्याय प्रणाली की आवश्यकता पर बल देती है। यह विचार पारिस्थितिक नारीवाद के सिद्धांतों से भी मेल खाता है, जहाँ न्याय केवल मानव समाज तक सीमित नहीं रहता बल्कि प्रकृति और समाज के अन्य उपेक्षित वर्गों के प्रति भी उत्तरदायी होता है।

सीता का शिक्षा और अहिंसा पर बल देना प्रकृति और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया को दर्शाता है। सीता राम को पत्रों के माध्यम से युद्ध और हिंसा के स्थान पर शिक्षा और संस्कार द्वारा समाज को बदलने की बात करती हैं। वे मानती हैं कि, 'युद्ध और हिंसा तात्कालिक शमन भले कर दें दुर्वृत्तियों का, उसका दुष्ट चक्र नहीं तोड़ पाते! असल समाधान तो बच्चों का संस्कार-प्रक्षालन है जो अच्छी परवरिश और सद्शिक्षा से ही सम्भव है।'[10] वे राम को यह समझाने का प्रयास करती हैं कि जंगलों को काटकर और धरती को रक्तरंजित करके कोई भी सभ्यता नहीं टिक सकती। वे चाहती हैं कि अगली पीढ़ी संघर्ष और हिंसा के चक्र से मुक्त

होकर समरसता और सह-अस्तित्व के सिद्धांत को अपनाए। उनका मानना है कि समाज को शिक्षा और नैतिकता के आधार पर विकसित किया जाना चाहिए जिससे दीर्घकालिक शांति और पारिस्थितिक संतुलन बना रहे। सीता का विश्वास है, 'सुशिक्षा की आंच में ही इनकी हिंसक वृत्तियां हमेशा के लिए गलेंगी! सुशिक्षित बच्चे अपने अभिभावकों के चरित्र का परिष्कार कर सकते हैं।'[11] सीता राम को बताती हैं कि रावण अपने अहंकार, हठ और पूर्वाग्रहों का परित्याग कर चुका था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उसका आत्मिक परिष्कार हो चुका था। रावण जो प्रारंभ में अहंकार और शक्ति का प्रतीक था, धीरे-धीरे एक परिष्कृत चेतना की ओर अग्रसर होता है। वह सीता से रुद्रवीणा सीखने की इच्छा व्यक्त करता है। इसके द्वारा वह प्रतीकात्मक रूप से यह दर्शाता है कि वास्तविक शक्ति हिंसा में नहीं बल्कि संगीत और सृजनात्मकता में निहित है। सीता भी उसे यह संदेश देती हैं कि सच्ची प्रगति वही है जो प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखे। रावण के साथ संवाद में भी सीता प्रकृति के स्वायत्ता अस्तित्व की बात करती हुई स्पष्ट करती हैं कि कोई भी व्यक्ति किसी और की रुद्रवीणा नहीं बजा सकता। हर व्यक्ति को स्वयं अपनी चेतना विकसित करनी होगी और प्रकृति स्वयं उसे आवश्यक ज्ञान प्रदान करेगी। उनका यह विचार दर्शाता है कि बाहरी सत्ता या प्रभुत्व के बजाय आत्मज्ञान और प्रकृति के साथ एकात्मता ही वास्तविक विकास का मार्ग है।

'तृन धरि ओट' उपन्यास में मातृत्व की नई परिभाषा दी गई है। पारंपरिक रूप से मातृत्व को केवल जैविक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता रहा है, लेकिन इसमें मातृत्व को एक व्यापक सामाजिक और संवेदनात्मक भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में जब राक्षस वंश के अनाथ बच्चों को स्थान दिया जाता है, तो सीता उनमें अपने पुत्र लव-कुश का प्रतिबिंब देखती हैं। अनामिका की सीता पर्यावरण को सृष्टि का पूरक मानती हैं और प्रकृति के संचालन में मातृ-दृष्टि को केंद्रीय स्थान देती हैं, जो किसी भी प्रकार के भेदभाव से परे है। उनका विचार है कि मातृत्व केवल जैविक प्रक्रिया नहीं बल्कि एक मानसिक और संवेदनात्मक अनुभव है, जो किसी भी व्यक्ति के भीतर विद्यमान हो सकता है। इस संदर्भ में वे मातृत्व को केवल स्त्री तक सीमित न रखकर पुरुष की संवेदनशीलता को भी मातृ-दृष्टि का हिस्सा मानती हैं। 'जैविक मातृत्व से भी बड़ा है दृष्टि का मातृत्व, जो धीरे-धीरे अर्जित किया जा सकता है- युद्धक्लान्त और स्वार्थाक्रान्त इस आवेग-शासित धरती पर किसानों के धैर्य से प्रेम और शांति की हरीतिमा संचरित करना जरूरी है।'[12] सीता का यह व्यापक मातृत्व दृष्टिकोण दलित-आदिवासी समुदायों के प्रति सहानुभूति और समावेशिता को भी दर्शाता है। पारंपरिक आख्यानों में वनवास केवल राम, सीता और लक्ष्मण के लिए एक संघर्षपूर्ण यात्रा के रूप में वर्णित किया गया है, लेकिन 'तृन धरि ओट' में यह सामाजिक न्याय और परस्पर सहयोग का माध्यम बनता है। सीता वाल्मीकि के आश्रम में रहकर दलित-आदिवासी समुदायों के साथ एक समान दृष्टिकोण अपनाती हैं और उनके जीवन को सुधारने के लिए शिक्षा और समावेशिता को बढ़ावा देती हैं। वे मानती हैं कि, ' जब जंगल के आदिवासी बच्चों और राक्षसों की भोली सन्ततियों के लिए कोई पाठशाला जंगल में चले तो 'संस्कृति' और 'प्रकृति' के बीच के सम्यक् संवाद की सुभग आधारपीठिका ये बन सकेंगे।'[13] सीता केवल एक राजकुमारी या पत्नी के रूप में सीमित नहीं रहतीं हैं बल्कि वे एक शिक्षिका, मार्गदर्शिका और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उभरती हैं।

सीता अपने पुत्रों लव-कुश को पत्र लिखती हैं, तब वे केवल मातृस्नेह नहीं प्रकट करतीं बल्कि एक गहरी जीवनदृष्टि भी प्रदान करती हैं। लव-कुश को संबोधित पत्र में सीता उन आदर्शों पर बल देती हैं जो समावेशी समाज की स्थापना और मानवीय करुणा को सुदृढ़ करने में सहायक होते हैं। वे कहती हैं कि संसार को हमेशा माँ की आँखों से देखो, क्योंकि मातृत्व केवल गर्भधारण तक सीमित नहीं है बल्कि यह करुणा और संवेदनशीलता का प्रतीक है। यह विचार पारिस्थितिक नारीवाद की उस मूल भावना को अभिव्यक्त करता है, जिसमें स्त्री और प्रकृति को एक-दूसरे का पूरक माना जाता है। 'दुनिया को माँ की ही आंख से देखना हमेशा। धरती की माँ बनकर जीना। सब उसके संसाधनों के दोहन में लगे हैं। इस ओर सजग रहना कि कोई किसी पर हावी न हो- सबको अपनी संभावनाएँ मुकुलित करने के अवसर मिलें, संसाधनों का वितरण सम्यक् हो और धरती के कोष से जितना लिया जाए, उससे दूना लौटाया जाये।'[14] सीता का यह कथन संसाधनों के न्यायसंगत वितरण और उनके सतत विकास की आवश्यकता पर बल देता है। वे उन शक्ति-संबंधों की असमानता की आलोचना करती हैं, जिसमें कुछ समूह प्रकृति और कमजोर वर्गों का दोहन कर अपनी सत्ता को कायम रखते हैं। पारिस्थितिक नारीवाद इसी वर्चस्ववादी संरचना का प्रतिरोध करता है और यह तर्क प्रस्तुत करता है कि सामाजिक न्याय और पारिस्थितिक संतुलन परस्पर जुड़े हुए हैं। सीता के शब्दों से यह स्पष्ट होता है कि धरती को केवल संसाधन के रूप में देखने के बजाय उसे एक पोषक और जीवंत इकाई के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए ताकि सभी जीवों को अपनी संभावनाओं को विकसित करने का समान अवसर मिल सके। प्रकृति संतुलन स्थापित करने की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुरूप कार्य करती है, जिसके अंतर्गत वह किसी भी क्षति की भरपाई विभिन्न प्रक्रियाओं और तंत्रों के माध्यम से सुनिश्चित करती है। इसलिए सीता कहती हैं, 'प्रकृति क्षतिपूर्ति के सिद्धांत में विश्वास करती है।'[15] मनुष्य की तामसी प्रवृत्तियाँ समाज के विघटनकारी तत्वों के रूप में सामने आती हैं और पर्यावरणीय असंतुलन का कारण भी बनती हैं। सीता अपने पुत्रों को संबोधित करते हुए उन प्रवृत्तियों की पहचान कराती हैं। वे समझाती हैं कि, 'किसी के पीछे पड़ जाना, सबकी खाट खड़ी करना, स्वयं को श्रेष्ठ, दूसरों को अधम जानकर शेखियाँ बघारा करना, अधिकार और कर्तव्य में सही सन्तुलन न बिठा पाना ऐसी तामसी वृत्तियाँ हैं, जिनसे ग्रस्त कोई व्यक्ति सहज प्रसन्न रह ही नहीं सकता और इससे प्रकृति का सन्तुलन भी भंग होता है।'[16] मनोवैज्ञानिक एवं नैतिक पतन की ये प्रवृत्तियाँ मनुष्य को अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए संसाधनों का अति-दोहन करने तथा सत्ता एवं वर्चस्व की प्रतिस्पर्धा में पारिस्थितिकीय तंत्र की उपेक्षा करने के लिए प्रेरित करती हैं।पारिस्थितिक नारीवाद के दृष्टिकोण से देखा जाए तो सीता का यह मातृत्व दृष्टिकोण प्रकृति और मानव समाज के बीच सहजीवी संबंध को भी उजागर करता है। वे प्रकृति को केवल संसाधन के रूप में नहीं बल्कि जीवन के मूल आधार के रूप में देखती हैं, जिसमें हर जीव और समुदाय का समान अधिकार होना चाहिए। उनकी दृष्टि में केवल स्त्रियों की स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं बल्कि संपूर्ण सृष्टि की मुक्ति आवश्यक है। इस प्रकार 'तृन धरि ओट' उपन्यास पारिस्थितिक नारीवाद, सामाजिक न्याय और समावेशिता के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करते हुए एक समतामूलक समाज की कल्पना प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष - 'तृन धरि ओट' में अनामिका का प्रयोगात्मक लेखन पारंपरिक आख्यानों की सीमाओं को तोड़ता है और स्त्री-दृष्टि से इतिहास और मिथकों की पुनर्व्याख्या करता है। रामकथा के भीतर रहते हुए भी यह उपन्यास नए

विमर्श खोलता है, जिसमें भारतीय समाज में स्त्री चेतना को एक नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। सीता के चरित्र का पर्यावरणीय और नारीवादी दृष्टि से पुनर्परिभाषण किया गया है। सीता सामाजिक अन्याय और पितृसत्तात्मक संरचनाओं के खिलाफ संघर्ष करती हुई पर्यावरणीय चेतना और सामूहिक न्याय की प्रेरक शक्ति के रूप में सामने आती हैं। सीता का दृष्टिकोण पारिस्थितिक नारीवाद की मूल भावना को अभिव्यक्त करता है, जिसमें स्त्री और प्रकृति को एक-दूसरे का पूरक माना गया है। वे सामाजिक अन्याय और पितृसत्तात्मक मान्यताओं पर प्रश्न उठाते हुए संवेदनशील न्याय व्यवस्था की आवश्यकता पर बल देती हैं। उनका विचार केवल स्त्रियों की स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहता अपितु समाज में वंचित और शोषित वर्गों के प्रति भी एक न्यायसंगत दृष्टिकोण की वकालत करता है। पर्यावरण और स्त्री की स्थिति के बीच अंतर्संबंध को समझने तथा उसे एक नई परिभाषा प्रदान करने का यह प्रयास पारिस्थितिक नारीवाद के सिद्धांतों को सशक्त करने के साथ-साथ समाज में संवेदनशील, समावेशी और न्यायसंगत दृष्टि विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पारिस्थितिक नारीवाद केवल एक सैद्धांतिक विमर्श नहीं अपितु सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण उपकरण भी हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. के. वनजा, ईको-फेमिनिज्म, वाणी प्रकाशन, 2013, पृष्ठ संख्या-103
2. सीमोन द बोउवार, स्त्री उपेक्षिता(अनु. प्रभा खेतान), हिंदी पॉकेट बुक्स प्रा.लि., 2002, पृष्ठ संख्या-67
3. के. वनजा, ईको-फेमिनिज्म, वाणी प्रकाशन, 2013, पृष्ठ संख्या-41
4. अनामिका, तृन धरि ओट, वाणी प्रकाशन, 2023, पृष्ठ संख्या-45
5. वही, पृष्ठ संख्या-40
6. वही, पृष्ठ संख्या-213
7. वही, पृष्ठ संख्या-108
8. वही, पृष्ठ संख्या-155
9. वही, पृष्ठ संख्या-155
10. वही, पृष्ठ संख्या-36
11. वही, पृष्ठ संख्या-24
12. वही, पृष्ठ संख्या-26
13. वही, पृष्ठ संख्या-46
14. वही, पृष्ठ संख्या-218
15. वही, पृष्ठ संख्या-57
16. वही, पृष्ठ संख्या-19

****